UGC, Pune & S.R.T.M. University, Nanded Sponsored

Three Days International Interdisciplinary Conference in Hindi, Marathi, Urdu & English on

लोक साहित्य : वैश्विक परिदृश्य

लोक साहित्य : जागतिक परिप्रेक्ष्य

لوک ادب : عالمی تناظر

Folk Literature : Global Perspective *(FLGP-2016)*

28, 29, 30 January, 2016

Hindi :Volume :1

Edited By :
Dr. G.N. Shinde
Dr. Sandip S. Paikrao
Dr. K.B. Gitte

ISBN-978-81-923487-4-2

१४४.	टी. प्रताप सिंह	–	४१८
१४५.	डॉ. जे. श्रीनिवासुल रेड्डी	–	४२०
१४६.	अशोक चवान	–	४२३
१४७.	अजय	–	४२५
१४८.	तल्ला निंरजन	–	४२७
१४९.	डॉ. टी.सुमति	–	४२८
१५०.	डॉ. (श्रीमती) कल्याणी जैन	–	४३०
१५१.	डॉ. संगीता गुप्ता	–	४३३
१५२.	प्रकाश कृष्णा कोपार्डे	–	४३७
१५३.	डॉ. सहदेव वर्षाराणी निवृत्तीराव	–	४४०
१५४.	ठाकुर संध्या ला.	–	४४५
१५५.	बी. श्रीनिवास राव	–	४४७
	के. विजया कुमारी	–	४४७
१५६.	डॉ. नारायाना	–	४४९
१५७.	डॉ.संजय पिराजी चिंदगे	–	४५२
१५८.	डॉ. कावळे रेविता बलभीम	–	४५५
१५९.	एल. विजयलक्ष्मी	–	४५७
१६०.	विजया चांदावत	–	४६०
१६१.	डॉ. वडचकर एस.ए.	–	४६२
१६२.	आर. सपना	–	४६४
१६३.	डॉ.जहीरुद्दिन रफियोद्दिन पठान	–	४६५
१६४.	डॉ. संतरा चौहान	–	४६७
१६५.	डॉ. सौ. रमा प्र. नवले	–	४६९
१६६.	डॉ.ए.डी.चावडा	–	४७४
१६७.	डॉ. रेणुका मोरे	–	४७८
१६८.	प्रा. जाधव देविदास भिमराव	–	४८०
१६९.	डॉ. संतोष विजय येरावार	–	४८५
१७०.	गिते दिपीका बाबुराव	–	४८७
१७१.	डॉ. के.बी.गिते	–	४९०
१७२.	डॉ. लीला कर्वा	–	४९३

ISBN : 978-81-923487-4-2

बंजारा लोक गीतों में व्यक्त सोस्कृतिक चेतना

डॉ. संतोष विजय येरावार
देगलूर महाविद्यालय,देगलूर ता.देगलूर जि.नांदेड

लोकगीतों में अद्‌भुत प्रकृति सौन्दर्य देखने को मिलता हैं। लहलाते खेत, नदी-नाले, पर्वत, इनकी छटा के दर्शन लोकगीतों के माध्यम से मन को प्रफुल्लित कर देते हैं। दिवाली, दशहरा, रक्षाबंधन, होली, तीन आदि त्यौहारों ने इन लोकगीतों के माध्यम से एक नया रस उत्पन्न हो जाता है। वास्तव में लोकगीत ऐसे सरोवर है जो अलौकिक है जिनका रस कभी समाप्त नहीं होता।

इन सब आधारोंपर लोकगीतों के कई प्रकार हो सकते है। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने लोकगीतों को छ: श्रेणियों में विभक्त किया है।

१) संस्कार संबंधी गीत
२) ऋतु संबंधी गीत
३) व्रत संबंधी गीत
४) देवता संबंधी गीत
५) जाति संबंधी गीत
६) श्रम संबंधी गीत

जनजाति बंजारा एक घुमक्कड़ प्रवृत्ति की जाति है। इस कारण इसमें अनेक संस्कृतियों का प्रभाव दिखाई पड़ता है। बंजारा लोक गीतों के मौखिक गायन का प्रचलन विषेष और प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है। बंजारा उत्सव व आनंद प्रिय जाति है। जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक संदर्भो में सभी अवसरों पर गीत गाने का प्रचलन है इन गीतों में बंजारा जीवन समग्र रूप से प्रतिबिंबित होता है।

गीत बंजारा संस्कृति की अनमोल धरोहरों में प्रमुख है। बंजारा लोक गीत लोक कंठ का अक्षय धन है, जो उनके हृदय के ऐश्वर्य का प्रतीक है। डॉ. सुरेष गौतम गीतों की विषेषता बताते हुए कहते हैं - ''गीत मानव की अंतर्यात्रा है। यह अंतर्यात्रा अश्रु-हास-मय पथ से ही नहीं भावनाओं की बंकिम विधियों से होकर भी होती है।'' बंजारा गीत का संबंध समाज और संस्कृति से अधिक है। इन गीतों में सामान्यत: संस्कार, विवाह, उत्सव, श्रमिक गीत, स्त्रियों का गीत, जन्म आदि से संबंधित गीत होते है।

बंजारा लोक गीत जन-जन का गीत है। यह जन मानस में रचे-बसे गीत है। डॉ. सुरेष गौतम का कहना है कि जो गीत संपत्ति की तरह विरासत में मिले ही वही लोक गीत है। मौखिक परंपरा का अवगाहन करके सहजानुभूति से संपन्न ये लोक गीत किसी भी जाति, समुदाय, राष्ट्र की सबसे बड़ी पहचान है।[२] बंजारा समाज में बिना गीत का कार्य नहीं होता है। हर कार्य गीत से आरंभ होता है और गीत से ही समाप्त होता है।

बंजारा जाति के अंतर्गत लोकगीत मुख्यत: जन-समुह द्वारा गाये जाते है। बंजारा लोकगीतों में बराबर ढंग से संस्कारों, त्यौहारों, उत्सवों के समय गाया जाता है। व्यक्तिगत रूप से स्त्री-पुरूष, छोटे-बड़े इन सभी का अधिकार लोकगीतों पर होता है। 'बंजारा' समाज में मुलत: हिन्दु होने के नाते हिंदुओं के संस्कारों के समान संस्कार गीत गाये जाते है।

सीतला :

बंजारा लोक सीतला माता की उपासना करते है। बंजारो की देवताओं में एक आराध्य देवता सीतला माता है। इसी कारण वश बंजारा जनजाती में सीतला त्यौहार मनाया जाता है। सीतला माता को ही भवानी भी संबोधित कीया जाता है। माना जाता है कि सात बहोनों मे सबसी बढी बहन सीतला माता है। सीतला माता के साथ अन्य छ: बहनों की पूजा की जाती है।

तीज :

बंजारा जनजातिमें मनाये जानेवाले विविध त्यौहारों में एक महत्त्वपूर्ण त्यौहार तीज का मनाया जाता है। मुख्यत: कुवारी लडकियों का अंत्यतप्रिय त्यौहार है। साधारणत: प्रतीवर्ष कार्तिक मास में यह तीज का उत्सव मनाया जाता है। निरंतर दस दिन तक अत्यंत धुमधामसें यह त्यौहार मनाया जाता है। दस दिन के उपरान्त इस का समापन होता है। तीज का एस प्रसिध्द गीत दृष्टव्य है -

'' बाई यें तीज बोई हम देवोंज वासू।
देवीज वासू गंगा देवीज वासू।
लडीम लडी खणगी बाई देवोंज वासू।
देवोंज वासू गंगा देवोंज वासू।
आज नाचे लाल बाई हम देवोंज वासू।
देवींज वासू गंगा वासू।''[२]

होली :

बंजारा जनजाति में होली का अंत्यत महत्त्व है। यदि कहा जाए की बंजारा समाज में महत्त्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगीं। सभी आयु के लोग अत्यंत हर्ष और उल्हास के साथ होली मनाते है। इस अवसर पर इनके मुख्य से हजारो लोकगीत प्रस्फुटित होते है।

ISBN : 978-81-923487-4-2

लोककला :

बंजारा जनजाति की विशिष्ट पहचान उनकी लोककला है। लोककला के अंतर्गत लोकसंगीत, लोकनृत्य, लोकचित्रकला महत्त्वपूर्ण है। सारी कलावों में उनकी विशिष्ट प्रतिभा के दर्शन होते है। खास कर लोकनृत्य में विविध प्रकार की छटाए दिखाई देती है।

संपूर्ण भारतभर में बंजारा जनजाति में मुख्यत: सोलाह प्रकार के लोकनृत्य प्रचलित है। जैसे तलवार नृत्य, लडी नाच, लाठी नृत्य, उपरेरो नृत्य, डो-डो नगारा नृत्य, मंजिरा नृत्य, पीर नृत्य, विवाह नृत्य, राधा नृत्य, पनिहारिन नृत्य, लंगडी नृत्य, रास नृत्य, मटकी नृत्य, कवार कन्यार नृत्य, डंडा जोडेरो नृत्य तथा टिपरी पाई नृत्य।

इन नृत्य में मुख्यत: गीतो का एवं संगित का जोड होता है। गीत गाकर नाचने की विशिष्ट शैलीया है। जैसे एक उदाहरण दृष्टव्य है-

''नाच बाई नाच उपरेरो नाच।
काचे कोडी घालण उपरेरो नाच।
घमकों पडी बाई गोदेना नाच।
नाच बाई नाच उपरेरो नाच।''[3]

संस्कार .

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। विविध धर्मो में, जातियों में विविध प्रकार कें संस्कार प्रचलित है। बंजारा जनजातिभी इससे अपवाद नही है। बंजारा जनजाति पर हिंदू धर्म का प्रभाव होनेसे या हिंदू धर्म का ही एक अंग होने के कारण हिंदू धर्म में प्रचलित सोलह संस्कारों का प्रभाव इस घुमंतु जनजाति पर स्वाभाविक रूप में पाया जाता है। संस्कारों मे शिष्यु जन्म, दळिया धोकायर कार्य, विवाह संस्कार, केल्डार सगाई, वांसळीर सगाई, गोळखानो आदि संस्कार मुख्यत: पाये जाते है। जिनमें लोकगीतों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक संस्कार के समय विशिष्ट प्रकार के गीत गाणें की परंपरां प्रचलित है। प्रत्येक गीतों का एक विशिष्ट लहेजा एवं महत्व है। इन गीतों में बंजारा जनजाति की संस्कृति प्रस्फुटित होती है। बंजारा जनजाति की संस्कृति कों बनाये रखने तथा उसे निरंतर प्रवाहमान करने का कार्य यह लोकगीत अनादि काल सें कर रहे है।

मनोरंजन :

भारतीय संस्कृति में मनोरंजन का प्रवाधान मिलता है। ''मुख्यत: मनोरंजन दो प्रकार के माने गये है। एक शारीरिक मनोरंजन तथा दूसरा मानसिक मनोरंजन।''[4] शारीरिक थकान कों दूर करने के लिए मानसिक मनोरंजन का प्रावधान तथा मानसिक थकान को दूर करने के लिए शारीरिक मनोरंजन का प्रावधान मिलता है। बंजारा जनजाति में उपरोक्त दोनों प्रकार के मनोरंजन के दर्शन होते है। शारीरिक मनोरंजन में विविध प्रकार के खेल, नृत्य आदि का प्रचलन बंजारा जनजाति में दिखाई देता है। मानसिक मनोरंजन में विविध प्रकार के लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, कला-पथक, लोकनाट्य आदि का प्रचलन बंजारा जनजाति में पाया जाता है। इन मनोरंजन के साधनों में लोकगीतों का योगदान महत्त्वपूर्ण है। उपरोक्त सारे प्रकारों में लोकगीत तथा लोकसंगीत का उपयोग अनिवार्यत: किया जाता है।

निष्कर्ष :

भारतीय संस्कृति के काननकुसम में पल्लवित एवं सदा सुंगधित रहनेवाला पूष्प बंजारा लोकसंस्कृति है। वैसे तो विविध धर्म जाति, जनजाति यों के समिश्रण से बनी भारतीय संस्कृति विश्व कि प्राचीनतम् संस्कृतियों में एक है। जिसका वैश्विक पटल पर सदा ही प्रभाव रहा है। इस संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग बंजारा संस्कृति है।

आधुनिकता के इस दौर में समय के साथ-साथ बंजारा जनजातिनें भी विकास की और अपने कदम उठायें है। आधुनिकता का प्रभाव निश्चितरूप सें ही इस जनजातिपर दिखाई देता है। फिर भी बंजारा जनजाति ने अपनी सांस्कृति धरोहर को निरंतर प्रवाहमान रखा है। मौखिक रूप में प्रचलित विविध प्रकार कें लोकसाहित्य बंजारा संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। जिसें परंपरांसे पालन करने का निरंतर प्रयास इनके द्वारा होता रहा है। विशेषत: विविध त्यौहार, संस्कार, लोककला, तथा मनोरंजन इस संस्कृति के रक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देते है। आज यांत्रिकता के दौड में जहां मनुष्य आपने आप से कटता जा रहा है। महत्वकाक्षां की दौड में निरंतर भाग रहा है। ऐसे परिवेश में बंजारा जनजाति अपने आप को ढाल तो रही है। फिर भी अपने लोक संस्कारो को विस्मृत न करते हुये अपने सांस्कृतिक धरोहर को निरंतर प्रवाहमान कर रही है।

संदर्भ :

१) डॉ. सुरेश गौतम - लोक साहित्य - पृ.सं. ६७
२) डॉ. सुरेश गौतम - लोक साहित्य - पृ.सं. ६५
३) डॉ. सुरेश गौतम - लोक साहित्य - पृ.सं. ६७
४) डॉ. एल पाण्ड - भाषा और लोक साहित्य - पृ.सं. ८३
५) डॉ. एल पाण्ड - भाषा और लोक साहित्य - पृ.सं. ८३

ISBN : 978-81-923487-4-2